अध्याय 21

इसहाक और इश्माएल में तनाव

21 अध्याय का पहला भाग पुत्र की प्रतिज्ञा के इर्द गिर्द घूमता है। बहुत लम्बी प्रतीक्षा के बाद, इसहाक का आना, कोई संदेह नहीं कि अब्राहम और सारा के परिवार में आनन्द लाया। फिर भी, क्योंकि वह अपने सम्बन्ध में परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा होते हुए देखते हैं, अब्राहम पहले ही से इश्माएल का पिता बन गया था, सारा की दासी हाजिरा से उत्पन्न उसका पुत्र। इसके परिणाम से परिवार में कलह उत्पन्न हो गया। इसलिए, इसहाक का आगमन,यह न केवल बड़े उत्साह को ही लाया परन्तु हाजिरा और इश्माएल के निकाले जाने में अति कलह को समाप्ति तक भी पहुँचाया।

इस अध्याय का बाद का भाग एक कहानी को प्रस्तुत करता है जो अब्राहम और अबीमेलेक, पलिश्ती राजा पर केन्द्रित है। दो मनुष्यों ने एक दूसरे के साथ और उनकी भावी पीढ़ी के साथ विश्वासयोग्यता और दया के साथ व्यवहार करने के लिए बेर्शबा में वाचा बांधी।

इसहाक का जन्म (21:1-7)

[1]सो यहोवा ने जैसा कहा था वैसा ही सारा की सुधि लेके उसके साथ अपने वचन के अनुसार किया। [2]सो सारा को अब्राहम से गर्भवती हो कर उसके बुढ़ापे में उसी नियुक्त समय पर जो परमेश्वर ने उससे ठहराया था एक पुत्र उत्पन्न हुआ। [3]और अब्राहम ने अपने पुत्र का नाम जो सारा से उत्पन्न हुआ था इसहाक रखा। [4]और जब उसका पुत्र इसहाक आठ दिन का हुआ, तब उसने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उसका खतना किया। [5]और जब अब्राहम का पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ तब वह एक सौ वर्ष का था। [6]और सारा ने कहा, परमेश्वर ने मुझे प्रफुल्लित कर दिया है; इसलिये सब सुनने वाले भी मेरे साथ प्रफुल्लित होंगे। [7]फिर उसने यह भी कहा, कि क्या कोई कभी अब्राहम से कह सकता था, कि सारा लड़कों को दूध पिलाएगी? पर देखो, मुझ से उसके बुढ़ापे में एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

आयत 1. अपनी प्रतिज्ञा के पुत्र के लिए 25 वर्ष प्रतीक्षा करने के बाद, **यहोवा ने जैसा कहा था सारा की सुधि ली, शब्द "सुधि ली"** की अभिव्यक्ति इब्रानी शब्द פָּקַד *(पाकाद)* का अनुवाद है, जिसका अर्थ है **"**भेंट करना।**"** बाइबल में प्राकृति और मानवीय घटनाओं में परमेश्वर के हस्तक्षेप के विचार को व्यक्त

करने का यह एक आम रूपक है। कभी कभी यह करुणामयी और लाभकारी भेंट होती थी जैसा कि यहाँ पर है (देखें 50:24, 25; निर्गमन 4:31; रूत 1:6; भजन 8:4); अन्य घटनाओं में यह अनुशासनात्मक दण्ड होता था जैसा कि दस आज्ञाओं में चितौनी के शब्द के रूप में दर्शाया गया है (निर्गमन 20:5; व्यव. 5:9)। परमेश्वर ने कहा था कि सारा के एक पुत्र होगा (17:19; 18:10), और अब **जैसा परमेश्वर ने** [उसको] **कहा था वैसा ही किया**। एक बड़े आश्चर्यकर्म के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञा के पूरे होने के लिए इस बाइबल अंश पर बल दिया गया है।

आयत 2. स्त्रियों से यहोवा की भेंट बाइबल इस अभिव्यक्ति का प्रयोग करती है जिसमें - हन्नाह (1 शमूएल 2:21), एलिजाबेथ (लूका 1:68) और सारा - शामिल हैं जो परिणाम स्वरूप गर्भवती हुईं और सन्तान को जन्म दिया। परन्तु इस तरह के बच्चों का दिव्य पितृत्व का विचार नहीं है, जैसे मूर्तिपूजक देवताओं का, जिनके विषय में कहा गया स्त्रियों से लैंगिक रूप से भेंट की। परन्तु, यह तो भाषा का एक अलंकार है, अर्थ यह कि परमेश्वर ने इस तरह की स्त्रियों को बांझपन की स्थिति से छुड़ाया और गर्भधारण करने की क्षमता दी। 21:2 में इस संदर्भ पर ज़ोर दिया गया है, जो बताता है कि **सारा गर्भवती हुई और बुढ़ापे में अब्राहम के लिए पुत्र को जन्म** दिया। इस मामले में, उनके बुढ़ापे के कारण, मरी हुई की सी दशा जानकर यहोवा की भेंट ने दोनों ही पति और पत्नी में नये प्राण भर दिए (रोमियों 4:19)। इसी कारण से, बाइबल अंश इस बात पर ज़ोर देता है कि सारा के गर्भ का फल "पुत्र" था जो कि कुलपति के बुढ़ापे में जन्मा। **यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि प्रतिज्ञा किए हुए बच्चे का जन्म ठहराए हुए समय पर हुआ जो परमेश्वर ने उसे कहा था** (देखें 17:21; 18:14)।

आयत 3. जैसा कि **अब्राहम** को पहले इश्माएल का नाम दिया गया था (16:15), अब उसने उसके पुत्र का नाम परमेश्वर के द्वारा पिछले वर्ष दिए गए आदेश के प्रति सारा के प्रत्युत्तर के आधार पर नाम दिया। **उसने लड़के का नाम इसहाक दिया** ("वह हँसा"), जो वही नाम था जो परमेश्वर ने उसके गर्भधारण से भी पहले रखा था (17:19)। यह नाम उपयुक्त था क्योंकि अब्राहम और सारा दोनों ही अपने बुढ़ापे में प्रतिज्ञा किए हुए बच्चे को लेकर अविश्वास से हँसे थे (17:17; 18:12)।

आयत 4. बाइबल अंश इसहाक के जन्म के समाचार पर कुलपति की प्रसन्नता की भावना के विषय विवरण नहीं देता है। उसकी ज़रूर ही ऐसी प्रतिक्रिया होगी, क्योंकि यह उसके लम्बे समय से चली आ रही और अवास्तविक दिखाई देने वाले सपना साकार हुआ था। हम यह जानते हैं, जैसे परमेश्वर ठहराए हुए समय में पुत्र के विषय अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने में विश्वासयोग्य था, उसी तरह से **अब्राहम अपने पुत्र इसहाक के खतने के विषय विवेकशील था, जब वह आठ दिन का हुआ जैसा परमेश्वर ने उसे आदेश दिया था**। इस विषय में कुलपति मूसा से भिन्न था, जिसने बाद में अपने पुत्र के खतने को अनदेखा किया जब तक कि वह बड़ा नहीं हो गया था (निर्गमन 2:21, 22; 4:24-26)।

आयत 5. प्रश्न जो अब्राहम ने एक वर्ष पहले किया था (17:17) - "क्या सौ वर्ष के व्यक्ति के बच्चा होगा?" - उसका उत्तर मिल गया था। जो स्वाभाविक दृष्टिकोण से तो असम्भव था वास्तव में परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा हुआ। **कुलपति एक सौ वर्ष का था जब इसहाक का जन्म हुआ।**

आयत 6. बच्चे के जन्म पर, **सारा** ने खुशी के मारे गीत कहा उस विषय में जो कुछ परमेश्वर ने उसके लिए किया था। उसने कहा, **"परमेश्वर ने मुझे प्रफुल्लित कर दिया है; इसलिये सब सुननेवाले भी मेरे साथ प्रफुल्लित होंगे।"** यहाँ उसने इसहाक के नाम के साथ शब्दों पर एक नाटक खेला। पहले यह नाम अविश्वास की हँसी के साथ जुड़ा हुआ था (17:17-19; 18:12-15)। अब, उसने हँसी की बहुतायत का अनुभव किया; और उसने विश्वास किया कि जिसने भी वृद्ध स्त्री के बच्चा जनमाने की कहानी सुनी उसके साथ हँसेगा - "उस पर नहीं" जैसा कि कुछ लोगों ने इस कथन का व्याख्यान किया है। उपहास की हँसी का विचार पूर्णतः संदर्भ से बाहर है। सारा प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के ज़बरदस्त कार्य के भय में आनन्दित हुई थी, जिसने दो वृद्ध लोगों को माता पिता बना दिया था।[1]

आयत 7. इसके अतिरिक्त, सारा अपने बड़े आनन्द की घोषणा करती रही जो इसहाक का जन्म लेकर आया था। अपने गर्भधारण की अयोग्यता की निराशा और खालीपन को महसूस करने के स्थान पर, उसने अपने मातृत्व की प्रसन्नता को एक प्रश्न के साथ प्रकट किया: **"क्या कोई कभी अब्राहम से कह सकता था, कि सारा लड़कों को दूध पिलाएगी?"** हाँ यह प्रश्न निस्संदेह, नकारात्मक उत्तर की आशा करता है: "नहीं कोई नहीं, साधारण परिस्थितियों में तो नहीं, क्या कोई अब्राहम को ऐसा समाचार देने की आशा करेगा कि सारा ने अभी ही पुत्र को जन्म दिया है और वह उसे दूध पिला रही है।" वास्तव में, उनकी इस आयु में बच्चा होने का सुझाव इतना संदेहजनक था कि दोनों ही कुलपति और उसकी पत्नी इस तरह की आशा को लेकर परमेश्वर पर अपने अविश्वास को व्यक्त कर चुके थे। परन्तु, "असम्भव सम्भावना" हो गई थी, और सारा प्रसन्नता से चिल्ला उठी, **"मुझ से उसके बुढ़ापे में एक पुत्र उत्पन्न हुआ।"**

सारा की ईर्ष्या (21:8-14)

[8]और वह लड़का बढ़ा और उसका दूध छुड़ाया गया: और इसहाक के दूध छुड़ाने के दिन अब्राहम ने बड़ी जेवनार की। [9]तब सारा को मिस्री हाजिरा का पुत्र, जो अब्राहम से उत्पन्न हुआ था, हंसी करता हुआ देख पड़ा। [10]सो इस कारण उसने अब्राहम से कहा, इस दासी को पुत्र सहित बरबस निकाल दे: क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ भागी न होगा। [11]यह बात अब्राहम को अपने पुत्र के कारण बुरी लगी। [12]तब परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, उस लड़के और अपनी दासी के कारण तुझे बुरा न लगे; जो बात सारा तुझ से कहे, उसे मान, क्योंकि जो तेरा वंश कहलाएगा सो इसहाक ही से चलेगा। [13]दासी के पुत्र

से भी मैं एक जाति उत्पन्न करूंगा इसलिये कि वह तेरा वंश है। [14]सो अब्राहम ने बिहान को तड़के उठ कर रोटी और पानी से भरी चमड़े की थैली भी हाजिरा को दी, और उसके कन्धे पर रखी, और उसके लड़के को भी उसे दे कर उसको विदा किया: सो वह चली गई, और बेर्शेबा के जंगल में भ्रमण करने लगी।

इसहाक का जन्म अब्राहम और सारा के लिए बड़े आनन्द को लाया। परन्तु, घराने के प्रत्येक व्यक्ति ने उसका स्वागत नहीं किया।

आयत 8. वृद्ध कुलपति और उसकी पत्नी ने अपने प्रतिज्ञा किए हुए **बच्चे** को बढ़ते हुए देखा जब तक उसका **दूध छुड़ाया गया। तब अब्राहम ने उस दिन एक बड़ उत्सव किया।** प्राचीन निकटपूर्व द्वेषों में बच्चे को तीन वर्ष की आयु में दूध छुड़ाया जाता था और उस समय एक उत्सव किया जाता था।[2]

आयत 9. इस अवसर पर, भले ही उत्सव थोड़े समय का था, यह **सारा** के लिए कष्ट था, ज्यों ही उसके और **हाजिरा** के बीच पुरानी शत्रुता एकबार फिर भड़क उठी। वह घटना जिसने उत्सव को बाधित कर दिया वह थी इश्माएल की शैली, तब एक सोलह या सत्रह वर्ष का युवक,[3] इसहाक के साथ "खेल रहा" (NRSV) था या इसहाक की "हँसी उड़ा" (NEB) रहा था, जो अभी छोटा बच्चा ही था। एनऐएसबी कुछ गहन बात बताता है कि सारा ने इश्माएल को अपने बच्चे צָחַק *(ज़खाक)* की **हँसी** उड़ाते हुए देखा। शब्द इसहाक के संदर्भ के आधार पर कई सम्भावित अर्थ हैं। परन्तु, यहाँ "हँसी" उड़ाना इस शब्द की गहनता के लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि पौलुस इस बाइबल अंश के अर्थ को समझ गया था कि इश्माएल ने इसहाक को "सताया" था (गला. 4:29)।[4] वास्तव में, हाजिरा के पुत्र ने बच्चे के साथ क्या किया, हम नहीं जानते; परन्तु सारा ने इश्माएल को अपने बच्चे के खतरे के रूप में देखा। कुछ लोगों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि उसने मात्र छोटे बच्चे के साथ मज़ाक ही किया था, उसको यह कहने के द्वारा मानसिक पीड़ा पहुँचाई कि वह अब्राहम का सच्चा वारिस होने के पद को कभी प्राप्त नहीं करेगा। वहीं दूसरी ओर, इसहाक के साथ असभ्य खेल खेलते ("हानिकारक व्यवहार"[5]) हुए उसने अपशब्दों का प्रयोग किया हो।

आयत 10. जो भी सारा ने देखा उसने उसके अन्दर अपने पुत्र की शारीरिक क्षति की सम्भावना को देखा या उसने इश्माएल की क्रिया को भविष्य में हिंसा की चेतावनी के रूप में देखा जो उसके पुत्र के जीवन के लिए खतरा हो सकती थी। इसलिए, उसने अपने पति से बिनती की, **"इस दासी को पुत्र सहित बरबस निकाल दे: क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ भागी न होगा।"**

जब सारा ने अब्राहम को हाजिरा और इश्माएल को "बाहर निकालने" के लिए याचना की, उसने גָּרַשׁ *(गराश)* शब्द का प्रयोग किया। यह वही शब्द है जो 3:24 में है, जब परमेश्वर ने "आदम को अदन की वाटिका से बाहर निकाला था।" यही शब्द एक बार फिर 4:14 में कैन के संदर्भ में पाया गया। जो कि "देश से बाहर निकाला गया।" 21:10 में, इसका अर्थ तलाक होता है, भले ही विवाह के विघटन के लिए यह शब्द पारिभाषिक रूप से दिखाई नहीं देता है जब कि मूसा

की व्यवस्था में इसका समावेश नहीं हुआ था (लैव्य. 21:7, 14; 22:13; गिनती 30:9; देखें यहेज. 44:22)।[6]

आयत 11. अब्राहम ने स्वयं को एक प्रकार की उलझन में पाया जिसका प्रायः बहुविवाह में अनुभव होता ही हैः उसको एक परिवार के बदले में दूसरे के प्रति निर्णय करना था। कहानीकार ने आंतरिक संघर्ष को चित्रित किया है जो इस कथन के द्वारा लागू होता है कि **यह बात अब्राहम को अपने पुत्र इश्माएल के कारण बुरी लगी**। अपने पहलौठे के लिए वृद्ध व्यक्ति का प्रेम बहुत गहरा था, और वह अपनी आत्मा में क्लेशित हो गया था और सारा की मांग से पीड़ा से भर गया था। जबकि परमेश्वर ने पहले ही से इसहाक को प्रतिज्ञा के पुत्र के रूप में निर्धारित कर दिया था जिसे वाचा अर्थात आशीष को लेना था (17:17-20; 18:9-15), सम्भवतः अब्राहम अचरज में था कि यह दो स्त्रियों शान्ति में क्यों नहीं रह सकतीं। परन्तु ऐसा दिखाई देता है कि उसकी दोनों पत्नियों के बीच की सड़नभरी शत्रुता का कभी भी समाधान नहीं हुआ; और अब सारा ने इश्माएल के शब्दों और कार्यों से इसहाक के प्रति खतरनाक ईर्ष्या को समझ लिया, कुलपति के घर की स्थिति का कोई इलाज नहीं था।

आयत 12. परमेश्वर ने **अब्राहम** को चेतायाः "**उस लड़के और अपनी दासी के कारण तुझे बुरा न लगे।"** इब्रानी शब्द (נַעַר, *नार)* जो "लड़के" लिए अनुवाद किया गया है वह किसी भी पुरुष बच्चे के लिए प्रयोग किया जा सकता है, किसी भी श्रेणी के लिए छोटे बच्चे से लेकर बड़े व्यक्ति तक। उदाहरण के लिए, *नार* शब्द शमूएल के लिए प्रयोग किया गया जब उसकी माँ ने उसका दूध छुड़ाया गया (1 शमूएल 1:24), यूसुफ के लिए जब सत्रह वर्ष का था (37:2), एकबार फिर यूसुफ के लिए जब वह तीस वर्ष का था (41:12, 46)। इश्माएल के लिए परमेश्वर के द्वारा "लड़का" बुलाया जाना इसका अर्थ यह नहीं कि तब वह इसहाक की तरह छोटा बच्चा ही था।

यह घराना कुछ ऐसी बातों से निपट रहा था जो व्यक्तिगत भावनाओं से बढ़कर महत्वपूर्ण थी। इसहाक वह स्रोत था जिसके द्वारा परमेश्वर कुलपति के वंशजों को आशीष देगा, अन्ततः संसार की सारी जातियों को। इसलिए, परमेश्वर ने अब्राहम को सारा के प्रति निर्देश दियाः **"जो बात सारा तुझ से कहे, उसे मान, क्योंकि जो तेरा वंश कहलाएगा सो इसहाक ही से चलेगा"** (देखें 12:2, 3; 17:19)। दूसरे शब्दों में, आशीर्वाद की वाचा में इसहाक का विशेष स्थान था और परमेश्वर के लोगों की आनेवाली पीढ़ियाँ अपनी वंशावली का अब्राहम इसहाक, प्रतिज्ञा का पुत्र से वर्णन करेंगी।

कई कारणों से हाजिरा और इश्माएल को निकालने के लिए परमेश्वर को अब्राहम की ताड़ना करनी पड़ी। (1) कुलपति को दोनों ही से प्रेम था, उसकी दासी पत्नी को और उसके पहलौठे पुत्र को निकालने से उसका हृदय टूट गया था। (2) अब्राहम ने हो सकता है विचार किया था पिछली बार जब उसने सारा की बात मानी थी, हाजिरा से पुत्र होने की बात पर सहमति। सारा की योजना और

अब्राहम का इसमें भागी होना उनकी ओर से विश्वास की कमी को दर्शाया, और इसने उनके परिवार में बहुत सी समस्याओं को खड़ा किया (16:1-6)। (3) प्राचीन पूर्वी देशों की सामाजिक प्रथाओं के अनुसार जिनके अधीन अब्राहम ने अपना जीवन व्यतीत किया था, पारिवारिक मामलों का निर्णय करने का अधिकार उसे था उसकी पत्नी को नहीं। इस कारण से, परमेश्वर ने उसे अपने पत्नी की अधीन होने का आदेश दिया क्योंकि वे परमेश्वर की दिव्य योजना के साथ अधिक सहमत थे बजाए कुलपति की उन बातों से।

आयत 13. सारांश में, परमेश्वर ने उस प्रतिज्ञा को दोहराया जो उसने इश्माएल के सम्बन्ध में 17:20 में अब्राहम से की थी: "मैं उसे भी बड़ी जाति बनाऊँगा।" कुलपति को निश्चित करने के लिए कि उसका पहलौठा वह और उसकी माता निकाले जाने के बाद नाश नहीं होगा, परमेश्वर ने जोड़ा, **"दासी के पुत्र से भी मैं एक जाति उत्पन्न करूंगा इसलिये कि वह तेरा वंश है।"** इस तरह से परमेश्वर ने कुलपति के परेशान हृदय को अपने सांत्वना भरे शब्दों से शान्त किया। परमेश्वर ने पद 13 में इश्माएल के लिए की गई प्रतिज्ञा को पहले के आश्वासन के साथ जोड़ा जो उसने पद 12 में इसहाक के सम्बन्ध में दी थी।

आयत 14. अब्राहम निस्संदेह उस रात सोया नहीं जब अपनी दासी पत्नी और अपने पहलौठे पुत्र को निकालने के हृदय विदारक कार्य का सामना कर रहा था। उसे एक छोटी सी आशा थी कि क्या वह उनको फिर कभी देख सकेगा। रात भर की बेचैनी के अपवाद के साथ, कुलपति चाहता था कि हाजिरा और इश्माएल सुबह ठण्डे ठण्डे ही अपनी यात्रा आरम्भ करें ताकि वह दोपहर की गर्मी असहनीय होने पहले पहले दूरी तय कर लें। इसलिए, बाइबल अंश बताता है कि सो **अब्राहम ने बिहान को तड़के उठकर रोटी और पानी से भरी चमड़े की थैली भी हाजिरा को दी।**

पाठक हैरान भी हो सकता है कुलपति ने अपने परिवार के सदस्यों को जंगल की यात्रा के लिए रोटी और पानी[7] से अधिक और कुछ क्यों नहीं दिया। क्या वह उनको रास्ते के लिए कुछ अतिरिक्त सामान देने की आशा कर रहा था? क्या अब्राहम के अन्दर को गुप्त इरादा था कि वे दूर तक यात्रा न करें, यह सोचते हुए कि सारा का क्रोध शीघ्र ही ठण्डा पड़ जाएगा और फिर वे घर वापिस आ जाएँगे?

सम्भावना के साथ, दुखी पति और पिता को यह याद आ रहा था कि पहले, जब हाजिरा जंगल की ओर भाग गई थी, "परमेश्वर के दूत ने उसे पानी के चश्मे के पास पाया" और उसे घर वापिस भेज दिया था (16:7-14)। क्या उसका और इश्माएल का इस बार भी वही अनुभव होगा? बेशक, हम नहीं जानते क्या-क्या विचार कुलपति के मन में दौड़ रहे होंगे; परन्तु, वे विचार चाहे कैसे भी थे, चिलचिलाते जंगल[8] में यात्रा के लिए उसने एक दिन की यात्रा से अधिक पानी नहीं दिया। उसने सोच लिया होगा कि किसी न किसी तरह से परमेश्वर हस्तक्षेप करेगा और उस ऊसर भूमि में उनको नाश होने से बचाए रखेगा।

इस कथन पर एक अन्य प्रश्न खड़ा होता है कि अब्राहम ने **उसके कन्धे पर रखी, और उसके लड़के को भी उसे देकर उसको विदा किया**। वास्तव में हाजिरा के कन्धे पर क्या था? LXX और सीरियन पिशत्ता अनुवाद सुझाते हैं कि रोटी और पानी के अतिरिक्त, अब्राहम ने बच्चे (इश्माएल) को उसके कन्धे पर डाल दिया था। कई आधुनिक टीका और अनुवाद इसी तरह का अनुवाद देते है (RSV; NRSV; NEB; REB; NAB; JB; NJB; TEV; NJPSV; NCV; CEV; ESV)। इसके अतिरिक्त, कुछ बाइबल समीक्षक इस विचार के समर्थन के लिए इस कथन पर कहते हैं कि उत्पत्ति के लेखक ने विरोधाभावी स्रोतों का प्रयोग किया जब उसने इस कहानी को लिखा। तर्क यह दिया गया कि हाजिरा किशोरावस्था के बच्चे को अपने कन्धों पर उठाने के सक्षम नहीं थी; इसलिए इश्माएल हो सकता है उस समय छोटा बच्चा ही हो, 21:9 के विचार विमर्श और 16:1-4, 16 के कालक्रम के विपरीत।

भले ही इब्रानी वाक्य विन्यास कुछ हद तक अनुपयुक्त है, मात्र यही नहीं है या वचन को समझने का यही उत्तम उपाय नहीं है, जैसा कि NASB और NIV में स्पष्ट है। इब्रानी का शाब्दिक अर्थ ऐसा होगाः "अब्राहम भोर को उठा और उसने रोटी और पानी की थैली और उसने उनको हाजिरा कन्धे पर रख दिया और उसने उसे उस लड़के को दिया और उसे विदा कर दिया।"[9]

21:10 शब्द "निकाल देना" *(गराश)* की तरह अभिव्यक्ति "विदा करना" שָׁלַח *(शलाख)* का भी अर्थ "तलाक" ही है (व्यव. 22:19, 29; यशा. 50:1; यिर्म. 3:1; मलाकी 2:16)। फिर भी, यह बाद में प्रयोग किया गया शब्द पहल वाले की तरह सख्त दिखाई नहीं देता है। जबकि सारा चाहती है कि अब्राहम "दासी निकाल दे," उसने "उसे विदा किया।" अब्राहम की क्रिया द्वेषपूर्ण नहीं थी; इसकी बजाए उसने मात्र परमेश्वर की इच्छा के हाथ में सौंप दिया।

अगला कथन हाजिरा को निस्सहाय घुमक्कड़ के रूप में चित्रित करता है। **वह चली गई, और बेर्शेबा के जंगल में भ्रमण करने लगी**। अध्याय 16 के विपरीत जब वह चली गई और उसे मिस्र जाने का प्रयास किया, इस समय कहाँ जाना है उसके मन में था। वह और उसका पुत्र अलग थलक थे, कोई घर नहीं और उनकी सहायता के लिए या शरण देने के लिए कोई भी नहीं। वे प्राचीन कनान के दक्षिणी भाग बेर्शेबा के जंगल में भटकते रहे। अब्राहम स्पष्ट रूप से अभी भी गेरार के क्षेत्र में ही रह रहा था, जहाँ अबीमेलेक राजा था (देखें 20:1; 21:22-34)। सम्भवतः, निर्वासित लोग पूर्व में यात्रा कर रहे थे, सम्भव है उत्तरी अरब की ओर, वह क्षेत्र जो बाद में इश्माएल के वंशजों का निवास स्थान बन गया था (25:12-18)। तथ्य यह कि वे बेर्शेबा के जंगल में चल रहे थे किसी हद तक पुष्ट था क्योंकि नाम का पहला भाग "कुएँ" בְּאֵר *(बेएर)* का उल्लेख करता है। भले ही कुआँ वहीं पर था, हाजिरा उसे तब तक नहीं देख सकती जब तक कि दूत ने उसे यह दिखाया नहीं था।

हाजिरा के लिए दिव्य प्रतिज्ञा (21:15-21)

15जब थैली का जल चुक गया, तब उसने लड़के को एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया। 16और आप उससे तीर भर के टप्पे पर दूर जा कर उसके सामने यह सोचकर बैठ गई, कि मुझ को लड़के की मृत्यु देखनी न पड़े। तब वह उसके सामने बैठी हुई चिल्ला चिल्ला के रोने लगी। 17और परमेश्वर ने उस लड़के की सुनी; और उसके दूत ने स्वर्ग से हाजिरा को पुकार के कहा, हे हाजिरा तुझे क्या हुआ? मत डर; क्योंकि जहां तेरा लड़का है वहां से उसकी आवाज़ परमेश्वर को सुन पड़ी है। 18उठ, अपने लड़के को उठा और अपने हाथ से सम्भाल क्योंकि मैं उसके द्वारा एक बड़ी जाति बनाऊंगा। 19परमेश्वर ने उसकी आंखे खोल दी, और उसको एक कुआँ दिखाई पड़ा; सो उसने जा कर थैली को जल से भर कर लड़के को पिलाया। 20और परमेश्वर उस लड़के के साथ रहा; और जब वह बड़ा हुआ, तब जंगल में रहते रहते धनुर्धारी बन गया। 21वह तो पारान नाम जंगल में रहा करता था: और उसकी माता ने उसके लिये मिस्र देश से एक स्त्री मंगवाई।

आयत 15. क्योंकि हाजिरा और इश्माएल के पास जंगल की एक दिन यात्रा के लिए पर्याप्त पानी नहीं था, दोपहर की तपती गर्मी का उन पर बुरा प्रभाव हो रहा था। **जब थैली में पानी खत्म हो गया, और अब वह अपनी प्यास नहीं बुझा सकते थे, हाजिरा ने लड़के को एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया।** बाइबल अंश एक व्याकुल माँ के वर्णानात्मक दृश्य को दिखाती है जिसने अपने पुत्र को जंगल की झाड़ी की छाँव के नीचे छोड़ दिया। आशय यह है कि हाजिरा ने अपनी आशा खो दी थी और वह अपने पुत्र की शीघ्र मृत्यु की राह देखने लगी। उसको छाँव में रखने से वह चिलचिलाती धूप से कुछ राहत देने का प्रयास कर रही थी और जितना हो सकता था वह उसके जीवन के अन्तिम क्षणों को कुछ आरामदायक बनाना चाहती थी।

आयत 16. हाजिरा इश्माएल के दुख को झेल न सकी; **इसलिए वह दूर चली गई और उसके सामने तीर भर के टप्पे की दूरी पर बैठ गई**, अर्थात इतनी दूरी पर जितनी दूरी से कोई तीर चला सकता हो। ऐसा होने पर भी वह उसे देख नहीं सकती थी, हो सकता है कि वह उसके इतनी करीब थी जहाँ से वह सहायता के लिए उसकी चिल्लाहट को सुन सकती थी। यहाँ तक वह भी व्यर्थ ही था, क्योंकि व्यक्तिगत रूप से प्यासे गले, ऊष्माघात और शरीर में पानी की कमी से मरते हुए, गले से कोई आवाज़ निकलना भी असम्भव था। ज्यों हाजिरा बैठ गई, अपने पुत्र की मृत्यु की दूरी को रोकने में वह निस्सहाय थी, उसके मुँह से हताशा की प्रार्थना निकली: **"मुझ को लड़के की मृत्यु देखनी न पड़े।"** इश्माएल के जीवित रहने या उसकी अपनी एक ही आशा, कि वह दिव्य हस्तक्षेप में रख दे; इसलिए, वह चिल्ला चिल्ला के रोने लगी।

आयत 17. इस हृदयविदारक क्षण में, **परमेश्वर ने उस लड़के की सुनी; और उसके दूत ने स्वर्ग से हाजिरा को पुकार के कहा, "हे हाजिरा तुझे क्या हुआ?"** यह

निश्चय ही आलंकारिक प्रश्न के रूप में पूछा गया क्योंकि दूत ने उसे उत्तर देने का अवसर नहीं दिया। इसके स्थान पर, उसने अपने प्रश्न के तुरन्त बाद उसको उत्साहित करने के लिए शब्द थेः **"मत डर; क्योंकि जहां तेरा लड़का है वहां से उसकी आवाज़ परमेश्वर को सुन पड़ी है"** (16:11; 17:20 की टिप्पणी को देखें)। इस कथन का आश्वासन उस प्रश्न का उत्तर देता है कि अब्राहम ने क्यों अपने यह दो प्रियजनों को इस तरह के अपर्याप्त भोजन सामग्री देकर जंगल में भेज दिया (21:14)। अब तक उसके जीवन में, कुलपति का विश्वास इस सीमा तक पहुँच गया था कि वह देखरेख और उनकी कठिन यात्रा के लिए प्रावधान के लिए परमेश्वर विश्वास करने को तैयार था।

आयत 18. तब दूत ने इस तथ्य के लिए हाजिरा की आँखों को खोला कि उस निराशाजनक जंगल के बाहर इश्माएल का भविष्य था। उसने उसे बच्चे को उठाने के लिए चेताया उठ, **अपने लड़के को उठा और अपने हाथ से सम्भाल**। बाइबल अंश शाब्दिक रूप से कहता है, "अपने हाथ से सम्भाल" यह इब्रानी मुहावरा है जिसका अर्थ "अपना उत्साह उसे दो।"[10] तब स्वर्गिक वाणी ने प्रतिज्ञा को दोहराया जो दूत ने कई वर्ष पहले हाजिरा से की थी। इस समय परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा देने में और अधिक निश्चित था उसके पुत्र इश्माएल से **एक बड़ी जाति बनाऊँगा** (देखें 16:10-12)।

आयत 19. परमेश्वर न केवल इश्माएल को भविष्य में आशीषित करने का ही हितार्थी था, परन्तु वह उसकी वर्तमान में उसके शरीर में पानी की कमी की स्थिति के प्रति भी चिंताशील था, क्योंकि थैली का पानी बिलकुल खत्म हो चुका था। हाजिरा की प्रार्थना के उत्तर में, **परमेश्वर ने हाजिरा की आँखों को खोला और उसने पानी के कुएँ को देखा**। कुआँ तो हमेशा से ही वहीं पर था, जब से वह "बेर्शेबा के जंगल" में थे (21:14 की टिप्पणी को देखें)। परन्तु, ऐसा दिखाई देता है कि उसने पानी के स्रोत को ढूँढने की आशा खो दी थी और उसकी आँखों में इतने आँसू भरे हुए थे कि वह इसे देख नहीं पाई थी। इस बात में हाजिरा को दूत की और किसी बात के लिए निर्देश की ज़रूरत नहीं थी; उस ने जाकर थैली को जल से भरकर लड़के को पिलाया। कहानीकार हाजिरा की अपनी प्यास बुझाने के विषय कुछ नहीं कहता; इसके बजाए उसने एक माँ के चित्र को दर्शाया जिसका पहला काम अपने बच्चे को पानी पिलाना था। यह तो स्पष्ट है कि इश्माएल के तरोताज़ा होने के बाद ही उसने जीवन दायक पानी को पीया होगा।

आयत 20. हाजिरा और इश्माएल के बेर्शेबा जंगल में आकस्मिक अनुभव का विवरण देने के बाद, लेखक ने संक्षिप्त रूप से लड़के के जीवन का सारांश दिया। **परमेश्वर लड़के के साथ था** ज्यों ज्यों वह "बनैले गदहे के समान बनता गया" (16:12) **जो जंगल में रहता था**, समाज के किनारों पर। उसने घुमंतू जीवन शैली अपनाया इश्माएल एक धनुर्धारी बन गया। उसने स्वयं को एक दक्ष शिकारी के रूप में विकसित किया होगा, जिसने उसे शत्रुता भरे वातावरण में जीने के सक्षम किया। बाद में, उसके वंशों में एक वंश "केदार के पुत्र," उनका "धनुर्धारी" और

"वीर योद्धाओं" के रूप में वर्णन किया गया (यशा. 21:17; देखें उत्पत्ति 25:12, 13)।

आयत 21. एक संक्षिप्त अंतिम विवरण वर्णन करता है कि इश्माएल **पारान नाम जंगल में रहता था**, विशाल जंगल जो कनान के दक्षिण भाग से लेकर सिनाय प्रायद्वीप और लाल सागर (अकाबा की खाड़ी) तक फैला हुआ था (गिनती 12:16; 13:3, 26)। क्योंकि हाजिरा एक मिस्री स्त्री थी (16:1, 3; 21:9; 25:12), और क्योंकि वह और इश्माएल उसकी जन्म भूमि के निकट ही रहते थे, उसने अपने **पुत्र के लिये मिस्र देश से एक स्त्री मंगवाई**। प्राचीन पूर्वी देशों की प्रथा के अनुसार, आमतौर पिता अपने पुत्र के लिए पत्नी लाने को निश्चित करता था (24:1-67; 34:4)। इस मामले में, यह सम्भव नहीं था, क्योंकि अब्राहम ने हाजिरा को निकाल दिया था। उसने इसलिए इस ज़िम्मेदारी को अपने ऊपर ले लिया जोकि सामान्य रूप से उसके पति को करनी थी, और उसने सम्भवतः सौदागरों के हाथ से किसी मिस्री दासी को लिया था जो पारान के जंगल में से यात्रा करते थे (देखें 37:28)।

अब्राहम और अबीमेलेक के साथ संधि (21:22-34)

इस नयी कहानी में, ध्यान अब्राहम की ओर मुड़ जाता है, जो फिर स्वयं को अबीमेलेके साथ बातचीत करता हुआ पाता है।

संधि (21:22-26)

22उन दिनों में ऐसा हुआ कि अबीमेलेक अपने सेनापति पीकोल को संग ले कर अब्राहम से कहने लगा, जो कुछ तू करता है उस में परमेश्वर तेरे संग रहता है: 23सो अब मुझ से यहां इस विषय में परमेश्वर की किरिया खा, कि तू न तो मुझ से छल करेगा, और न कभी मेरे वंश से करेगा, परन्तु जैसी करुणा मैं ने तुझ पर की है, वैसी ही तू मुझ पर और इस देश पर भी जिस में तू रहता है करेगा 24अब्राहम ने कहा, मैं किरिया खाऊंगा। 25और अब्राहम ने अबीमेलेक को एक कुएं के विषय में, जो अबीमेलेक के दासों ने बरीयाई से ले लिया था, उलाहना दिया। 26तब अबीमेलेक ने कहा, मैं नहीं जानता कि किस ने यह काम किया: और तू ने भी मुझे नहीं बताया, और न मैं ने आज से पहिले इसके विषय में कुछ सुना।

आयत 22. यह घटना हुई, जैसे कि बाइबल अंश बताता है, **उन दिनों में**। स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है: "किन दिनों में?" कुछ विद्वान सोचते हैं कि उत्पत्ति का लेखक यहाँ से उन पीछे के दिनों को देखता है जब अब्राहम ने अबीमेलेक के साथ सारा के विषय में झूठ बोला था (20:1-18), इसहाक के जन्म से पहले (21:1-3)। जबकि यह विचार सम्भव है, यह उस तरह की अभिव्यक्ति अधिक दिखाई देती है "उन दिनों में" जिसका अर्थ है उन घटनाओं में कहानीकार ने क्रमकाल का पीछा किया। अन्य शब्दों में, अब्राहम और अबीमेलेक के बीच

संधि इसहाक के जन्म, उसके दूध छुड़ाए जाने और हाजिरा और इश्माएल को निकाले जाने के बाद हुई (21:1-21)।

इस अवसर पर, **अबीमेलेक पीकोल सेनापति** को अपने साथ लाया। नाम "पीकोल" का मूल अनिश्चित है। इसको हुरियन,[11] अनातोलियन,[12] या फलीस्ती के रूप में में जाना गया है (12:32, 34; 26:1, 26), परन्तु यह नाम किसी भी प्राचीन लेखों या शिलालेखों में नहीं पाया गया है। क्योंकि हुरियन को मेसोपोटामिया (ईराक) उत्तर पश्चिम से लेकर अनातोलिया (तुर्की)[13] तक फैला हुआ जाना गया है, गॉर्डन जे. वेन्हाम अनुमान लगाता है कि हो सकता है पीकोल के पुरखे "क्रेते" से होते हुए "एजियन या अनातोलिया से आए हों" ("कप्तोर"; अमोस 9:7), कई पलिश्तियों का मूल निवास।[14]

अबीमेलेक और पीकोल ने अब्राहम की यह कहते हुए प्रशंसा की, **"जो कुछ तू करता है उस में परमेश्वर तेरे संग रहता है।"** उन्होंने कई वर्षों से अब्राहम के धन और सम्पति को बढ़ते हुए देखा, विशेष रूप से उसके पशुओं के बड़े बड़े झुण्ड। इतनी गिनती के पशुओं के लिए चरवाहों और गडरियों की ज़रूरत है जो उनकी रक्षा के लिए प्रशिक्षित किए थे। लगभग 25 वर्ष पहले, अब्राहम की सेवा के लिए 318 पुरुषों ने युद्ध किया था (14:14), और इस समय तक उसके पास उससे भी दोगुनी संख्या में हो गए होंगे। अबीमेलेक और उसका सेनापति अब्राहम के बड़े सेवादल को एक ज़बरदस्त खतरे के रूप में देखा होगा।

पलिश्तियों ने इसलिए उससे मिलने की पहल की। उन्होंने अपनी बात को बड़ी प्रशंसा के साथ आरम्भ किया जो मानते हैं कि परमेश्वर אֱלֹהִים *(एलोहीम)* कुलपति के साथ था, जो भी उसने किया उसमें उसको आशीषित कर रहा था। *इलोहिम* परमेश्वर के लिए प्रयोग किया जानेवाला सामान्य शब्द है और उत्पत्ति की पुस्तक में परदेशियों के द्वारा प्रयोग किए जानेवाला एक सामान्य शब्द है, क्योंकि यह किसी भी देवता पर लागू किया जा सकता है (31:30; 41:38)। अब्राहम के सेवक और उसके अपनों की बीच में तनाव या शत्रुता को रोकने के लिए, अबीमेलेक ने एक संधि करने की इच्छा की, एक अनाक्रमण संधि, इस धनवान और शक्तिशाली परदेशी के साथ।

इन दो व्यक्तियों के बीच यह विचार विमर्श पहली भेंट के कई वर्षों के बाद हुई (20:1-18) क्योंकि उनके बीच की स्थिति अब पूर्णतया विपरीत थी। मूल रूप से, अब्राहम अबीमेलेक की उपस्थिति में अपनी जान को खतरा होने से डर गया था। इसलिए उसने सारा के विषय उससे झूठ बोला और राजा को उसे पत्नी होने के लिए दे दिया। परन्तु, अब, परिस्थितियाँ भिन्न दिखाई दे रही थीं। परमेश्वर की आशीषों ने कुलपति सम्पति को और उसके योद्धाओं की गिनती को बढ़ाया (21:22), और ऐसा लगता है कि राजा अपने देश में इस परदेशी से भयभीत हो गया था।

आयत 23. इसलिए, अबीमेलेक अपने सेनापति के साथ आया और अब्राहम के साथ संधि करने की बात की। उसने बिनती की कि कुलपति अपने परमेश्वर के

नाम से शपथ खाए कि वह उसके साथ या न उसके वंश के साथ या आने वाली पीढ़ी के साथ छल नहीं करेगा। अन्य शब्दों में राजा एक संधि करना चाहता था जिसमें अब्राहम परमेश्वर के सामने शपथ खाए कि वह कभी उसके लोगों पर आक्रमण नहीं करेगा या उसके राज्य को या भावी राजवंश उखाड़ने का प्रयास नहीं करेगा। अबीमेलेक ने मांग की कि अब्राहम उस पर वैसी **दया करे** (חֶסֶד, *चेसड*, "निष्ठापूर्ण आचरण" या "अटल प्रेम") जो कुलपति पर दर्षाई गई थी जब वह **देश** (גּוּר, *गुर)*, "परदेशी के समान रहा") में परदेशी था।

आयत 24. अब्राहम ने झट से कहा**, "मैं शपथ खाता हूँ।"** भले ही हम कुलपति के द्वारा खाई गई शपथ को ही पढ़ते हैं, हम जानते हैं कि दोनों ही व्यक्तियों के द्वारा अनाक्रामण संधि को वैध होने के लिए ऐसा किया जाना था। इसलिए, इस संस्कार के विवरण को पूरा होने पर, कहानीकार ने दोनों ही व्यक्तियों की शपथ के कथन को विश्वासयोग्यता से पालन करने के लिए शामिल किया है "शपथ खाई" (21:31)। सम्भवतः, पहले इसका वर्णन नहीं किया था क्योंकि इसको ऐसे भी समझा जा सकता था कि वह जो वाचा बांधता है इसके प्रति निष्ठावान होने के लिए शपथ खाएगा। एक ही प्रश्न था क्या अब्राहम अबीमेलेक के लिए ऐसा वायदा करेगा या नहीं। जैसे ही वह ऐसा करने के लिए सहमत हुआ, तो संस्कार की बाकी रस्म पूरी की गई।

आयत 25. इससे पहले कि यह दो व्यक्ति इस वाचा की पुष्टि करते, **अब्राहम** एक उलाहने को सामने लाया, जिस पर बात करना ज़रूरी था। उसने **अबीमेलेक को उलाहना दिया कि अब्राहम के दासों ने पानी का एक कुआँ खोदा था** (देखें 26:15, 18) और **अबीमेलेक के दासों ने उसे छीन लिया था**। यह कुलपति के लिए एक महत्वपूर्ण परीक्षण का मामला था। वह राजा और उसके लोगों पर "दया" चेसड दर्शाने के लिए वह पहले ही शपथ ले चुका था (21:23, 24), वह अबीमेलेक के दासों के साथ अपनी शपथ को उल्लंघन किए बिना उनके अपराध के लिए दण्ड नहीं दे सकता था। इसलिए अब्राहम के लिए एक ही उपाय था कि वह इस मामले में न्याय के लिए अबीमेलेक से बिनती करे।

आयत 26. कुलपति का कुआँ हथियाने का उलाहना आज हमें सम्भवत गम्भीर अपराध दिखाई न दे, अर्द्ध शुष्क भूमि में लोगों और जानवरों के यह एक जीवन मृत्यु का एक सशक्त मामला था। उस प्रतिज्ञा का क्या महत्व होता जो अब्राहम उसे देश में **अबीमेलेक** के समीप शान्ति में रह सकता यदि उसके पास इसके पानी का अधिकार न होता?

यह विषय इस नयी संधि के लिए एक अच्छा परीक्षण था। अब्राहम सीखना चाहता था कि हो या न हो राजा उसके साथ सही तरीके से निपटारा करे और उसके जिन दासों ने गलती की थी उन्हें सुधारे। आखिरकार, अबीमेलेक ने उसे बुलाया था, और जो उसके साथ लोग थे वह उसी के लोग थे, जो उसके देश के आस पास रहते थे (20:15)। अपने जीवनयापन के लिए देश और इसके पानी के प्रयोग पर यह सामान्य रूप से लक्षित था। राजा ने इस बात से अपनी

अनभिज्ञता जताई कि **ऐसा कार्य किसने किया था**। तब उसने अपने इस दोष के मामले को अब्राहम को यह कहते हुए बदला कि उसको इस समस्या की कोई जानकारी नहीं दी गई। अबीमेलेक ने ज़ोर देते हुए कहा कि उसे आज तक इस बात को सुना नहीं है।

संधि का अनुसमर्थन (21:27-34)

[27]तब अब्राहम ने भेड़ - बकरी, और गाय - बैल ले कर अबीमेलेक को दिए; और उन दोनों ने आपस में वाचा बान्धी। [28]और अब्राहम ने भेड़ की सात बच्ची अलग कर रखीं। [29]तब अबीमेलेक ने अब्राहम से पूछा, इन सात बच्चियों का, जो तू ने अलग कर रखी हैं, क्या प्रयोजन है? [30]उसने कहा, तू इन सात बच्चियों को इस बात की साक्षी जान कर मेरे हाथ से ले, कि मैं ने कुआँ खोदा है। [31]उन दोनों ने जो उस स्थान में आपस में किरिया खाई, इसी कारण उसका नाम बेर्शेबा पड़ा। [32]जब उन्होंने बेर्शेबा में परस्पर वाचा बान्धी, तब अबीमेलेक, और उसका सेनापति पीकोल उठ कर पलिश्तियों के देश में लौट गए। [33]और अब्राहम ने बेर्शेबा में झाऊ का एक वृक्ष लगाया, और वहां यहोवा, जो सनातन ईश्वर है, उससे प्रार्थना की। [34]और अब्राहम पलिश्तियों के देश में बहुत दिनों तक परदेशी हो कर रहा।

आयत 27. अब्राहम ने स्पष्टरूप से अबीमेलेक का भरोसा किया जब उसने उस जानकारी के विषय अनभिज्ञता जताई जो उसके दासों ने अब्राहम का कुआँ हथिया लिया था। जबकि बाइबल अंश भी उस विवाद के परिणाम का कोई विवरण नहीं देता है, राजा सम्भवतः कुलपति के दावे की पड़ताल करने के लिए सहमत हो गया था। अब्राहम ने इस बात के आश्वासन को पाए बिना कि राजा उसके ऊपर किए गए अपराध को सुधारेगा अबीमेलेक के अनाक्रमण संधि का अनुसमर्थन नहीं किया होगा। उस विवाद के शान्तिपूर्ण समाधान के आभार स्वरूप, कुलपति ने **भेड़ - बकरी, और गाय - बैल लेकर अबीमेलेक को दिए**।

मधुर सम्बन्धों के सुधार के साथ, **उन दोनों ने आपस में वाचा बान्धी**, जिसमें परस्पर दायित्व सम्मिलित थे। इब्रानी अभिव्यक्ति का अनुवाद "वाचा बांधी" (כָּרַת בְּרִית, *karat berit)* का शब्दिक अर्थ है "वाचा को काटना," यह सम्भवतः प्राचीन प्रथा में जानवर को दो भागों में काटने और शव के किए हुए भागों के बीच में चलने का संकेत करता है (देखें 15:7-11, 17, 18)। जो व्यक्ति ऐसा करते हैं वे स्वयं को इस श्राप के नीचे रखते हैं कि "इस जानवर का श्राप मुझ पर पड़ना चाहिए"[15] वे सभी सहभागी जो वाचा के दायित्वों का पालन नहीं करते हैं।

आयत 28. बाइबल अंश बताता है कि अब्राहम **ने भेड़ की सात बच्ची अलग कर रखीं**। यह बात स्पष्ट दिखाई देती है कि कुलपति ने सात पशुओं को चुना उनके अतिरिक्त जो अभी दो व्यक्तियों ने बलीदान किए थे। यह क्रिया परम्परा के बहुत आगे चली गई, क्योंकि अबीमेलेक स्वयं इसके अर्थ को लेकर उलझन में था।

आयत 29. क्योंकि अतिरिक्त मेमनों की महत्वता समझ में आने वाली नहीं थी। राजा को उसे ग्रहण करने में झिझक हो रही थी। उसने पूछने के द्वारा स्पष्टीकरण पर ज़ोर दिया, **"इन सात बच्चियों का, जो तू ने अलग कर रखी हैं, क्या प्रयोजन है?"**

आयत 30. अब्राहम ने राजा पर उसके दोनों ही कार्यों और प्रयोजन की व्याख्या की: **"तू इन सात बच्चियों को इस बात की साक्षी जानकर मेरे हाथ से ले, कि मैं ने कुंआ खोदा है।"** कुलपति अनाक्रमण संधि या मौखिक प्रतिज्ञा की सुरक्षा से बढ़कर चाहता था कि अबीमेलेक उस कुएँ के सही स्वामीत्व को निर्धारित करे; वह खुलेआम एक शपथ चाहता था, जो राजा के द्वारा खाई गई हो, कि कुआँ अब्राहम का है और उसकी के दासों ने उसे खोदा था।

आयत 31. यह कहानी अब्राहम की अबीमेलेक के साथ दूसरी भेंट को इस कथन के साथ समाप्त करती है कि कुलपति ने **उस स्थान में आपस में किरिया खाई, इसी कारण उसका नाम बेर्शेबा पड़ा**। इस "कुएँ" के अतिरिक्त (21:25, 30), "शपथ ग्रहण," "सात," और "शपथ" के उल्लेखों को इस भाग में दोहराया गया है (21:23, 24, 28, 29, 30)। लेखक ने यहाँ पर प्रयोग किए शब्दों की महत्वता का व्याख्यान किया है। नाम "बेर्शेबा" में दो इब्रानी शब्द हैं: בְּאֵר *(बीर)* जिसका अर्थ है कुआँ और שֶׁבַע *(शीबा)* जिसका अतिरिक्त अर्थ है "सात" जो कि सात भेड़ें कुलपति ने राजा को दीं। इसके नाम का अर्थ हो सकेगा "शपथ का कुआँ," उस स्थान का स्मरण करवाता है जहाँ दो व्यक्तियों ने शपथ खाई।[16]

कनान में 25 वर्षों से भी अधिक समय तक रहने के बाद, अब्राहम आखिरकार वैध रूप से कम से कम एक कुएँ का स्वामी होने का दावा कर सकता था। अब्राहम के कुएँ का वास्तविक का विवाद है, क्योंकि दो मील से भी कम के क्षेत्र में कुँओं का समय और उनकी गिनती को खोजना मुश्किल हो गया था जिसका आज आधुनिक नाम तेल अविव बताते हैं। इसके आगे, कोई नहीं जानता कि क्या या बेर्शेबा वही स्थान है जो कुलपति का बर्शेबा है।[17] भूकम्प, युद्ध के द्वारा विनाश, चश्मे या कुँओं का पानी सूखने के कारण से और अन्य कारणों से लोग कभी कभी प्राचीन स्थानों को छोड़ देते थे। वे लोग जो पुराने स्थानों से हट जाते थे वे नये नगर का नाम भी पुराने के नाम पर ही रख देते थे। पुरातवेत्ताओं ने पुराने युग में इस तरह के कई "स्थान परिवर्तन" के प्रमाणों को पाया है।

आयत 32. बेर्शेबा में अब्राहम के साथ सफलतापूर्वक **वाचा बांधने** और अनुसमर्थन के बाद, **अबीमेलक और पीकोल उठकर पलिश्तियों के देश में लौट गए**। यह कथन इस बात को दर्शाता है कि बेर्शेबा सीधे रूप से पलिश्ती नियंत्रण के अधीन नहीं था, परन्तु स्पष्ट रूप से इसकी सीमा इसके इतनी पास थी कि वे कुछ नियंत्रण करना चाहते थे और अब्राहम के साथ मिलकर शान्ति सम्बन्ध बनाए रखना चाहते थे, जो सामर्थी शेख वहाँ पर रहते थे।

कुछ समीक्षक अबीमेलेक, पीकोल और गेरार के पलिश्तीन कहानी के विषय उलझन में हैं। वे पलिश्तीन देश के उल्लेख को कालभ्रमित रूप में देखते हैं,

क्योंकि 1200 ई.पू. से पहले कनान देश में व्यापक स्तर पर उनके आने कोई प्रमाण नहीं है। परन्तु पुरातवेत्ताओं ने क्रेते के द्वीप ("कप्तोर"; आमोस 9:7) और मिस्र, कनान, सीरिया और मेसोपोटामिया के बीच व्यापक व्यापार के प्रमाण खोज लिए हैं जिसमें क्रेते शैली के भित्तिचित्र, मिट्टी के बर्तन और कुलपति के युग के प्याले शामिल हैं।[18] यदि ऐसी बात है तो इसके पीछे कोई पर्याप्त कारण नहीं है कि उत्पत्ति के पलिश्ती लोग क्रेते के लोगों के पहले दल क्यों नहीं बने और बाद में पलिश्ती अन्तिम दल क्यों नहीं बने, जिन्होंने व्यापक रूप से कनान देश पर चढ़ाई की।

परन्तु, यह पहले के निवासी बाद के पलिश्तियों से राजनैतिक रूप से भिन्न थे। वे लोग जिन्होंने संधि की थी, शान्तिप्रिय और परदेशियों के साथ व्यवहार करने में कूटनीति प्रयोग की; वे गेरार में रहते थे और राजा के द्वारा शासित किए जाते थे। इसके विपरीत, बाद के पलिश्ती युद्ध करने वाले वीर थे, जिन्होंने पाँच नगरों के साथ मेल किया हुआ था (पेंटापोलिस) - गाजा, अशदोद, अशकलोन, गत, और एक्रोन - यह पाँच राजाओं के द्वारा शासित किए जाते थे (यहोशू 13:3; न्यायियों 3:3; 1 शमूएल 6:16-18)।[19] इस्राएली लोगों ने न्यायियों के समय में और शाऊल के सम्पूर्ण राज्यकाल में पलिश्तियों के हाथों बहुत कष्ट उठाया था। यह दाऊद के शासन काल में नहीं था क्योंकि उसकी सेना उन्हें अपने अधीन कर लेती थी (2 शमूएल 8:1; 1 इतिहास 18:1)।

आयत 33. अब जो वाचा दोनों पक्षों के द्वारा ग्रहण की गई और उसकी पुष्टि कर दी गई, अबीमेलेक और पीकोल गेरार लौट गए। कुलपति वहीं रहा और **बेर्शेबा में झाऊ का एक वृक्ष लगाया।** नेगेव के दक्षिणी भाग में छाया के लिए झाऊ के पेड़ हमेशा से ही अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं और वे इस क्षेत्र की अर्द्ध शुष्क जलवायु के लिए अनुकूल होते हैं। खानाबदोश ने उन्हें परम्परागत लगाया क्योंकि यह पेड़ बीस से तीस फुट ऊँचाई तक बढ़ते हैं और छाया प्रदान करते हैं। चरवाहों के लिए उनकी और भी महत्वता थी क्योंकि जानवर उनकी झुकी हुई कोमल डालियों से पत्ते खाते थे।[20]

पुराना नियम में, पेड़ - विशेषकर सदाबहार - यह जीवन का, परिपूर्णता और परमेश्वर की आशीषों का चिन्ह है (2:9; 13:10; भजन 1:3; यिर्म. 17:7, 8; यहेज. 47:12)। क्योंकि कुलपति ने आराधना के कार्य के साथ झाऊ के पेड़ को लगाया, कुछ लोग इस पेड़ के लगाने को वेदी बनाने के समरूप देखते हैं। प्राचीन कनानी अपनी आराधना में पेड़ों, स्तम्भों और वेदियों का प्रयोग करते थे, और यह अपमानजनक प्रजनन संस्कारों से जुड़े हुए थे, इस्राएलियों के मूर्तियों का अनुसरण करने के रुझान के कारण, मूसा की व्यवस्था ने यहोवा की आराधना में पवित्र पेड़ों का प्रयोग वर्जित किया था (व्यव. 16:21)। क्योंकि अब्राहम हमेशा ही कनानियों के मन्दिरों से बचा रहा और परमेश्वर की स्तुति करने के लिए अपनी ही वेदियाँ बनाईं, हो सकता है वह प्रजनन संस्कारों के पेड़ों से सम्बन्ध के विषय में वह अनभिज्ञ रहा हो। यहाँ तक कि यदि वह इन प्रथाओं को जानता भी

होता, जो पेड़ उसने लगाए उसके लिए आराधना की वस्तु के रूप में कोई महत्वता न होती। ज्यों ज्यों यह पेड़ बढ़ते, उसके लिए यह परमेश्वर की आराधना करने का मात्र ठण्डा स्थान ही होते।

इस घटना से एक अन्य व्याख्यान होता है कि अबीमेलेक ने कुलपति को जब तक वह चाहे उस देश में रहने की अनुमति दे दी थी (20:15)। दो व्यक्तियों ने बेर्शेबा के कुएँ के पास अब्राहम की संपत्ति के रूप में शपथ खाते हुए अपनी अनाक्रमण संधि पर मुहर लगाई। पेड़ लगाने के द्वारा, सम्भवतः कुलपति उस देश में शान्ति से लेट रहा जिसमें उसके भेड़ बकरी और गाय बैल चरते थे और जहाँ पर उसके लोग रहते थे।

इस व्याख्यान के साथ यह कठिनाई है कि कुलपति और अबीमेलेक के बीच वाचा मात्र अनाक्रमण और कुलपति को उस देश में परदेशी की रूप में रहने की अनुमति की संधि दिखाई देती है ("परदेशी"; 21:23), स्वामी बनकर नहीं। शान्ति संधि के अनुसमर्थन के बाद, राजा सहमत हुआ - शपथ खाने के द्वारा - उस कुएँ के स्वामित्व को त्यागा जो अब्राहम के दासों ने खोदा था (21:30, 31), ज़मीन जायदाद की बड़ी मात्रा के बजाए, जिस पर अबीमेलेक का कुछ नियंत्रण था। आगे, नया नियम वर्णन करता है कुलपति ने "पराए देश में परदेशी रहकर ... तम्बूओं में वास किया" (इब्रा. 11:9)। स्तिफनुस ने कहा कि अब्राहम को "कुछ मीरास वरन पैर रखने भर की भी उस में जगह न दी" (प्रेरितों के काम 7:5)।[21] प्रत्यक्ष रूप में, कुआँ उसके पैर रखने की मिरास के रूप में नहीं गिना गया; इसके विपरीत, यह तो धरती में एक बड़ा छेद ही था, जिस पर कोई भी खड़ा नहीं हो सकेगा।

नया लगाया गया पेड़ मात्र इस बात का स्मरण ही करवाएगा कि यहाँ दो व्यक्तियों ने कुएँ के स्वामित्व को लेकर शपथ खाई थी। आभार पूर्वक, अब्राहम ने स्वाभाविक रूप से आराधना के साथ प्रत्युत्तर दिया, **सनातन परमेश्वर के नाम को पुकारा** אֵל עוֹלָם *(एल ओलाम)*। वह जानता था कि परमेश्वर - मूर्तिपूजक देवताओं की कथा कहानियों से भिन्न है, - वे जो कल्पना से बनाए गए हैं और उनकी नियति मृत्यु थी - वह सनातन परमेश्वर है जिसका कोई आरम्भ नहीं और न ही अन्त है। वह एल - शद्दाय है ("सर्वशक्तिमान परमेश्वर"; 17:1), जिसने अब्राहम के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियों को आशीष देने की प्रतिज्ञा की थी और ज्यों ज्यों समय बीतता गया उसके बाद कष्टों में खतरों में उसे सुरक्षा प्रदान की। यहोवा ने उसे और उसकी पत्नी को नया जीवन प्रदान किया था, जब उनके शरीर स्वाभाविक रूप से मर गए थे; और उनके स्वस्थ पुत्र, इसहाक हुआ। अन्त में, इस घटना में, परमेश्वर ने अबीमेलेक के हृदय को छुआ और उसके अब्राहम के लिए दयालु बना दिया, कनान देश में एक परदेशी को। अपने हृदय के आभार के साथ, अब्राहम ने यहोवा सनातन परमेश्वर की आराधना की।

आयत 34. बाइबल लेखक इस घटना को कुलपति के जीवन से सारांश देते हुए कह रहा है कि **अब्राहम पलिश्तियों के देश में बहुत दिनों तक परदेशी होकर**

रहा। इस समय, "पलिश्तीन का देश" स्पष्ट रूप से कनान देश के दक्षिण पूर्वी भाग की ओर सीमा तय नहीं हुई थी। इसलिए, एक भाव में, अबीमेलेक और पीकोल ने बेर्शेबा को छोड़ा और "पलिश्तियों के देश में लौट गए" (21:32)। परन्तु एक अन्य भाव से, जिस देश में अब्राहम रहता था, वह उनके राज्य का एक भाग था, वह कुछ समय के लिए पलिश्तियों के देश में रहा। शब्द "परदेशी" גּוּר *(गुर)* का अर्थ है कि वह "परदेशी" के रूप में कई वर्ष तक वहाँ रहा या कनान देश में "परदेशी होकर रहा," अर्थात, पलिश्तीन देश के बिलकुल पास ही।

अनुप्रयोग

अब्राहम, मिलाप करनेवाला (अध्याय 20; 21)

परमेश्वर की हमेशा से ही यही इच्छा रही है कि उसके लोग "मेल करवानेवाले" बने और यीशु ने ऐसे लोगों को धन्य कहा है (मत्ती 5:9)। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें किसी भी कीमत पर मेल करना है, न ही इसका यह अर्थ है कि मेल करवाने के लिए हमें हमारे सिद्धान्तों के साथ समझौता करना चाहिए। हमें हमेशा निष्क्रिय होने की ज़रूरत नहीं है; हमें उस बुराई का सामना करना चाहिए जो हमारे जीवनों को या हमारे परिवार को जोखिम में डाल सकती हो। पौलुस ने लिखा, "जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो," और कभी भी किसी से बदला न लो; मेल करनेवाले बदला परमेश्वर पर छोड़ देते हैं (रोमियों 12:18, 19)। प्राचीन काल में, जब किसी प्रकार की कोई सरकार नहीं होती थी या सरकार लोगों की रक्षा करने में और बुराई करने वालों को दण्ड देने में अक्षम होती थी (देखें रोमियों 13:1-7), तब परमेश्वर व्यक्तियों को या समूह को अपना बदला लेने के लिए ठहराता था (9:5, 6)।

अब्राहम मेल करनेवाला एक व्यक्ति था, हालांकि हमेशा सही तरीके से भी नहीं होता था। अपनी ही रक्षा के भय में, उसने अपनी पत्नी के विषय दो बार झूठ बोला। पहले उसने मिस्र में फिरौन के साथ (12:10-20) और फिर गेरार में अबीमेलेक के साथ (20:1-18)। उसने अपने जीवन को जोखिम में डालने की बजाए अपनी पत्नी को इन दो मूर्तिपूजक राजाओं की हवस का शिकार होने के लिए तैयार था। जैसा कि हमने देखा है, अब्राहम एक धनी मुखिया था। फिर भी अपने आरम्भ के वर्षों में, उसके पास अपनी निजी 318 योद्धाओं की सेना थी (14:14), और समय के साथ साथ उनकी गिनती दोगुनी हो गई थी। इसलिए, इसमें संदेह होता है कि यदि उसने उनकी बात नहीं मानी तो क्या यह शासक सारा को लेकर इसके साथ युद्ध करेंगे। परन्तु उसने कायरता का तरीका अपनाया और स्वयं को बचाने के लिए झूठ बोला।

वहीं दूसरी ओर, अध्याय 14 में, अब्राहम ने उस समय साहस दिखाया जब यरदन घाटी में चार राजाओं ने धावा बोल दिया था। उन्होंने पाँच राजाओं की

गुटबंदी को हराया जिन्होंने बहुत से लोगों को बंदी बना लिया था जिसमें लूत और उसका परिवार भी था। इस समय तक, अब्राहम ने पहले ही से अमोरियों के तीन भाई और उनके लोगों के साथ सुरक्षा गठबंधन कर लिया था। भले ही उनकी सेना इतनी बड़ी नहीं थी, यदि वे बुद्धिमानी से योजना बनाएँ तो जीत सकते थे। इसलिए उन्होंने रात को अचानक हमला किया और सामर्थी सेना जो पूर्वी राजाओं का बल थी हरा दिया, उनके बंदियों और धन सम्पत्ति दोनों ही को ले लिया। इस मामले में, लूत और उसके परिवार और अन्य आक्रामता के शिकार लोगों को बचाने के लिए अब्राहम को युद्ध करना था। वह युद्ध करने और निर्णयात्मक लड़ाई को जीतने के द्वारा एक मेल करने वाला व्यक्ति बन गया।

अध्याय 14 में सेना को बुलावा स्पष्ट रूप से शासन के प्रति एक छूट थी। कुलपति के जीवन में हम इस तरह की अन्य किसी घटना के विषय में नहीं पढ़ते। जब अबीमेलेक और पीकोल अब्राहम के लोगों और पलिश्तीन के मध्य शान्ति के आश्वासन के लिए अनाक्रमण संधि के लिए आए, तो कुलपति झट इसके लिए तैयार हो गया था। उसने एक ही बात की मांग रखी थी, उस कुएँ की वापिसी जो उसके दासों ने खोदा था; और राजा मान गया। अबीमेलेक के द्वारा अब्राहम के लिए इस तरह की संधि का प्रस्ताव असामान्य था क्योंकि यह दर्शाता है कि वह उसके बढ़ते हुए बल से डर गया था और पहचान गया था कि जो कुछ भी कुलपति करता है उन सब में परमेश्वर उसके साथ है (21:22)।

इस मूर्तिपूजक राजा के साथ शान्ति की वाचा बांधने के द्वारा अब्राहम ने अपने विश्वास के साथ समझौता नहीं किया था, जैसा कि बाद में इस्राएली और यहूदा के कुछ राजाओं ने किया। इसके विपरीत, जब कुलपति और अबीमेलेक ने अपनी संधि को पूरा किया, उसने यहोवा की आराधना की, "सनातन परमेश्वर" (21:33)। अनाक्रमण संधि (शान्ति संधि) और सच्चे परमेश्वर की आराधना दर्शाती है कि यहोवा अब्राहम को मेल करनेवाले के रूप में आशीष दे रहा था।

यीशु इस जगत में "शान्ति का राजकुमार" के रूप में आया (यशा. 9:6), और उसके जन्म पर स्वर्गदूत ने घोषणा की, "पृथ्वी पर शान्ति ..." (लूका 2:14)। मसीह की शान्ति सेना के द्वारा नहीं प्राप्त की गई थी जिसमें कि प्रचण्ड विनाश, हत्या, दास बनाना और लोगों को अपने अधीन करने के लिए दमन करना शामिल है। जैसे ही यीशु ने अपनी सेवा के अन्तिम सप्ताह में यरूशलेम में प्रवेश किया, वह किसी युद्ध के घोड़े पर सवार नहीं था या सेना के रथ पर नहीं था, परन्तु वह तो एक गदहे पर सवार था, एक लद्दू जानवर। उसने यह जकर्याह 9:9, 10 की नबूवत को पूरा करने के लिए ऐसा किया जिसमें कहा गया कि वह यरूशलेम के "घोड़ों" नाश करेगा, युद्ध के "धनुष" को तोड़ेगा, "रथों" का नाश करेगा और वह अन्य जातियों से शान्ति की बातें कहेगा। इस तरह के मसीह (राजा) की यहूदियों ने इच्छा नहीं की या रोमियों से आशा की थी (यूहन्ना 18:33-38)। यीशु ने परमेश्वर के लोगों को बाहर जाने से और तलवार के साथ परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के लिए मना किया (मत्ती 26:52)।

यीशु अपने शत्रुओं का नाश करने नहीं आया था, परन्तु उन्हें "ढूँढने और उद्धार करने" आया था (लूका 19:10)। ऐसा उसने उनके हृदयों को पिघलाकर किया जब वह जगत के पापों के लिए मरने के लिए तैयार हुआ (यूहन्ना 1:29; 3:16)। यह क्रूस की खींचने वाली शक्ति है, क्रूसित उद्धारकर्ता के द्वारा नये और अलग तरीके से फैलाई गई सामर्थ्य (यूहन्ना 12:31-33)।

परन्तु, क्रूस अपने आप में इसका अन्त नहीं था; या यह कोई अन्त करने का साधन था। यीशु ने मरने के द्वारा दर्शाया कि मृत्यु अन्तिम शब्द नहीं है। उसका महिमामय पुनरुत्थान जीवन चिन्हित के लिए नया युग आरम्भ हुआ, मसीह का शान्ति का राज्य। महान आदेश यीशु मसीह के द्वारा शान्ति का सुसमाचार (सुसमाचार) है (प्रेरितों 10:36-43)। वे लोग जो अपने आप से, अपने पड़ोसियों के साथ, विरोधियों के साथ या उद्धारकर्ता परमेश्वर के साथ युद्धरत हैं (इफि. 2:13-18)। वह शान्ति लाता है जो मनुष्य की समझ से परे है (फिलि. 4:7)। शान्ति जिसका अब्राहम और अन्य लोगों ने पिछले समयों में अनुभव किया वह तो उस अनन्त शान्ति का धुंधला सा एक स्वाद था जो यीशु - कुलपति के प्रतिज्ञा का "बीज" (वंश) (गला. 3:8, 16, 26-29) - वह अपने आत्मिक वंशज को अब और हमेशा के लिए प्रदान करता है।

इसहाक के आसपास की प्रतिक्रियाएँ (21:8-19)

ईर्ष्या, उपहास, क्रोध, दुख, निराशा, और आशा: इसहाक के जन्म के बाद अब्राहम के परिवार के सदस्यों की पारिवारिक स्थिति को लेकर यह भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियाएँ थीं। प्रतिज्ञा का बालक जब बढ़ रहा था तो इश्माएल ने उसके प्रति बुरे व्यवहार को दर्शाया।

इश्माएल की प्रतिक्रिया: ईर्ष्या और उपहास (21:8, 9)। इश्माएल की ईर्ष्या की प्रतिक्रिया सम्भवतः उसकी माता हाजिरा के द्वारा भड़काई गई थी, जो अपनी स्वामिनी के साथ कई वर्षों से ईर्ष्या करती आ रही थी। सारा के प्रतिज्ञा किए हुए बालक की माता बनने के बाद तनाव अति स्पष्ट हो गया था। बच्चे ने आखिरकार उस मिरास को पाना ही था जो इश्माएल की थी यदि वह अब्राहम के वारिस के रूप में बना रहता, भले ही दासी का पुत्र था। इश्माएल के लिए यह कैसी उद्दंडता थी जो 16 या 17 वर्ष का युवा लड़का ऐसे बच्चे का उपहास करे और पीड़ा पहुँचाए जो अभी तीन वर्ष की आयु का ही था। परमेश्वर ने पहले ही बता दिया था कि इश्माएल "बनैला गदहा होगा" (16:12) जिसका हाथ प्रत्येक व्यक्ति के विरुद्ध होगा, और उसने इस किशोरावस्था में अपने गुण को प्रकट करना आरम्भ कर दिया था।

शिशु इसहाक के प्रति इश्माएल की प्रतिक्रिया उस मौलिक संघर्ष को चित्रित करती है जो शरीर का कार्य और आत्मा का फल में हैं। वही युद्ध अपने भाई के प्रति कैन की ईर्ष्या दिखाई देता है जो अन्त में हाबिल की हत्या की ओर ले गई (4:3-8), पौलुस ने बाद में इस तरह के शरीर के कामों की एक उत्कृष्ट सूची दी, जिसमें आंतरिक व्यवहार की ईर्ष्या और डाह शामिल हैं जिसका परिणाम

बाहरीय झगड़े के कार्य के रूप में होता है (गला. 5:19-21)। प्रेरित के इस विचार का कारण यह है कि इस तरह के आंतरिक व्यवहार को यदि बेरोक छोड़ दिया जाए तो मानवीय सम्बन्धों में हमेशा ही विनाश ही होता है।

याकूब की पत्नी राहेल बांझ थी इसलिए वह लिआ से ईर्ष्या करती थी, जो अपने पति के लिए संतान उत्पन्न करती थी। जब राहेल ने संतान न होने के लिए याकूब को दोष दिया, तो वह उससे क्रोधित हुआ और कहा, "क्या मैं परमेश्वर हूं? तेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रखी है" (30:2)। जब यूसुफ के भाई अपने पिता के चहेते पुत्र की उद्दंडता को सहन नहीं कर सके, तो उनकी बेचैनी खुले आम झगड़े में बदल गई और यूसुफ को घात करने की धमकी दी।

ईर्ष्या और डाह, जो झगड़ा और मानसिक व्यथा को उत्पन्न करते हैं, यह न केवल विवाहित जीवनों और परिवारों के लिए ही विनाशकारी हैं, परन्तु जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी विनाशकारी होते हैं। इस तरह के व्यवहार ने ही यहूदी अगुओं ने यीशु को मृत्यु दण्ड दिलवाया (मत्ती 27:18; मरकुस 15:10), और वे मतभेदों की ओर भी ले जाते हैं जो आरम्भिक कलीसिया के आत्मिक जीवन के लिए खतरा थे (देखें 1 कुरि. 3:3; 13:4; गला. 5:26; फिलि. 1:15; 2:3; याकूब 3:14-16; 1 पतरस 2:1, 2)। परमेश्वर के लोगों को हमेशा इस तरह के घातक प्रभावों से सावधान रहना चाहिए।

सारा की प्रतिक्रियाः क्रोध और शत्रुता (21:10)। सारा की प्रतिक्रिया भड़क उठी जब उसने इश्माएल को इसहाक का तिरस्कार[22] करते और उपहास करते देखा। उसने किशोर के वचनों और कार्यों को खतरा और उसके पुत्र के लिए भविष्य में सम्भावित खतरे के रूप में समझा। इस मुल्यांकन में, सारा सही हो सकती थी; क्रोध में, उसने अपने पति से कहा, "इस दासी को पुत्र सहित बरबस निकाल देः क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र इसहाक के साथ भागी न होगा" (21:10)। सारा यह मांग करने में उचित कर रही थी कि उसका पति अपनी दासी पत्नी को "बरबस निकाले" (तलाक दे) और इसहाक की सुरक्षा के लिए इश्माएल को अपने साथ ले जाए। परन्तु ऐसा दिखाई देता है कि उसने हाजिरा और इश्माएल के प्रति ईर्ष्या और शत्रुता रखी और दोनों से पीछा छुड़ाने के लिए उसने इस अवसर का लाभ उठाया।

अब्राहम की प्रतिक्रियाः संकट और दुख (21:11-14)। अब्राहम ने सारा की मांग का प्रत्युत्तर संकट (21:11) और दुख के साथ दिया इश्माएल के प्रेम के कारण क्योंकि वह उसका पहलौठा था। निस्संदेह वह असहज संघर्ष विराम से जागरूक था जो इन दो स्त्रियों के बीच विद्यमान था। परन्तु, अब वह समझ गया था कि उसके विवाहित जीवन या परिवार में शान्ति नहीं रह सकती यदि वह इन प्रतिद्वंद्वी स्त्रियों और उनके पुत्रों को पारिवारिक रूप में मिलाकर रखेगा। परमेश्वर ने इस बात को कुलपति पर स्पष्ट की जब उसने कहा, "इस लड़के और अपनी दासी के कारण तुझे बुरा न लगे; जो बात सारा तुझ से कहे, उसे मान, क्योंकि जो तेरा वंश कहलाएगा सो इसहाक ही से चलेगा" (21:12)। परमेश्वर ने

अब्राहम को भरोसा दिलाया कि वह इश्माएल को आशीषित करेगा और उससे भी "एक जाति बनाएगा, क्योंकि वह तुम्हारा वंशज है" (21:13)।

इस दिव्य आदेश और प्रतिज्ञा का संदर्भ हमें अब्राहम की अगामी कार्यों को समझने में सहायता करता है। वह मूर्ख या निर्दयी नहीं था जब उसने हाजिरा और इश्माएल को एक दिन से भी कम पानी और रोटी देकर जंगल में विदा कर दिया। उसने अनुभव से सीखा था कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में विश्वासयोग्य है। उसको निश्चय रूप से याद था कि पहली बार हाजिरा जब जंगल में भाग गई थी, "परमेश्वर के दूत ने" उसको वापिस अपने मालकिन के पास जाने के लिए कहा था। उसने यह भी प्रकट किया था कि उसके एक पुत्र होगा और बहुत से वंश होंगे (16:7-14)। इसके साथ ही साथ, परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी कि वह इश्माएल को आशीषित करेगा, उसे "उसे बारह प्रधानों का पिता बनाऊँगा" और "उसे एक बड़ी जाति बनाऊँगा" (17:20)। अब परमेश्वर ने उसे फिर कहा, इश्माएल के भविष्य से सम्बन्धित अपनी प्रतिज्ञा को दोहराया (21:13), इसलिए अब्राहम ने कोई संकोच नहीं किया। उसने उन्हें थोड़े से भोजन के साथ विदा कर दिया, इस भरोसे के साथ कि परमेश्वर रक्षा करेगा और जंगल के प्रतिकूल वातावरण में उनके लिए प्रबन्ध करेगा (21:14)।

हाजिरा की प्रतिक्रियाः आनन्द की बजाए निराशा (21:15-19)। हाजिरा अब्राहम की तरह आश्वस्त नहीं थी। प्रत्यक्ष रूप से वह पहले के कई वर्ष के अनुभव को भूल गई थी, जब उसने जंगल में पानी का चश्मा पाया था और दूत उस पर प्रकट हुआ था और उसके पुत्र के प्रति और उसके भविष्य के वंशजों के प्रति उसने प्रतिज्ञा की थी (16:7-14)। इस समय, दोपहर के समय, जब उनका पानी खत्म हो गया, परेशान माँ ने अपने पुत्र को एक झाड़ी के नीचे छोड़ दिया और वह परमेश्वर की दुहाई देने लगी कि उसे अपने पुत्र की मृत्यु देखनी न पड़े (21:16)। एक बार फिर, स्वर्ग से दूत बोला। उसने बच्चे के रोने की आवाज़ सुन ली है और उसने इश्माएल से एक बड़ी जाति बनाने की प्रतिज्ञा की पुनः पुष्टि की (21:17, 18)। उसने हाजिरा को एक कुआँ दिखाया इस तरह से वे ताज़ा दम हो सके।

परन्तु यह एक और उदाहरण था कि कैसे परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में *विश्वासयोग्यता* को प्रकट किया। वह अपने लोगों के *विश्वास* को बढ़ाना चाहता है, ताकि वे उस पर और अधिक *भरोसा* कर सकें। अब्राहम और उसके परिवार के द्वारा परमेश्वर युगों युग तक की अपनी महान योजना को तैयार कर रहा था; इस पर भी वे मात्र अपनी ही चिन्ताओं में फंसे रहे। कितनी बार हम भी प्रायः स्वयं से परे देखने में और परमेश्वर की बड़ी योजना को देखने में विफल हो जाते हैं!

समाप्ति नोट्स

[1]गॉर्डन जे. वेनहेम, *जेनेसिस 16-50*, वर्ड बिबलिकल कमैंट्री, वाल. 2 (डलासः वर्ड बुक्स, 1994), 80-81. [2]ई. ऐ. स्पीसेर, *जेनेसिस*, दि एंकर बाइबल, वाल. 1 (गार्डन सिटी, एन.वाई.: डबलडे & कम्पनी, 1964), 155. देखें 1 शमूएल 1:22-24, और इसके साथ ही साथ 2 मक्काबियों 7:27. [3]अब्राहम की आयु छियासी वर्ष की थी जब इश्माएल का जन्म हुआ था (16:16) और 100 वर्ष की आयु में इसहाक का जन्म हुआ (17:17; 21:5), जब इश्माएल लगभग 14 वर्ष का था (देखें 17:24, 25)। लगभग तीन वर्ष के बाद, इसहाक के दूध छुड़ाने के समय, इश्माएल 16 या 17 वर्ष का होगा। [4]जे. बार्टन पायने, "צָחַק," *TWOT* में, 2:763. [5]केनेथ ऐ. मैथ्यूस, *जेनेसिस 11:27-50:26*, दि न्यू अमेरिकन कमैंट्री, वाल. 1बी (नेशविलीः ब्रॉडमैन & होलमन पबलिशर्स, 2005), 269. [6]हेमर रिंग्ग्रेन, "גָּרַשׁ," *थियोलोजिकल डिक्शनरी ऑफ दि ओल्ड टेस्टामेंट*, ट्रांस, जोहन टी. विल्लिस और जेफ्री. डब्लू बोमिले, एड. जी. जोहनेस बुट्टरवेक और हेमर रिंग्ग्रेन (ग्रैंड रेपिडस, मिश.: डब्लयु एम. बी. एरडमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1978), 3:68-69. [7]पूर्ण विकसित बकरी के चमड़े की थैली में लगभग तीन गैलन पानी आता था और इसका भार लगभग तीस पौंड होता था। [8]अनुभवी गाइडस उन लोगों को बताते हैं जो इस्राएल के दक्षिणी जंगल में और सिनाय प्रायद्वीप में यात्रा करने जाते हैं कि उनको उस प्रतिकूल वातारण में जीवित रहने के लिए दिन में कम से कम दो गैलन पानी पीना चाहिए। [9]वाल्टर सी. कैसर, जूनियर, पीटर एच. डेविडस, एफ. एफ. ब्रूस, और मनफ्रेड टी. बारूक, *हार्ड सेविंगस ऑफ दि बाइबल* (डॉन्नर्स ग्रूव, बीमार.: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1996), 123. [10]जॉन टी. विल्स, *जेनेसिस*, द लिविंग वर्ड कमेंटरी (ऑस्टिन, टेक्स.: स्वीट पब्लिशिंग कंपनी, 1979), 284.

[11]इबिद., 285. [12]वेन्हेम, 91. [13]फ्रेडरिक डब्लयु. बुश, "हुरियनस" *दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइकलोपीडिया* में, रेव. एड., जेफ्री डब्लयु. ब्रोमिले (ग्रैंड रेपिडस, मिश., डब्लयुएम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1982), 2:784-85. [14]वेन्हेम, 91-92. [15]ई. कटस्क, "כרת," *थियोलोजिकल लैक्सीकन ऑफ दि ओल्ड टेंस्टामेंट* में, ट्रांस. मार्क ई. बिडल, एड. अर्नस्ट जेन्नी और क्लाउस वैस्टरमैन (पीबॉडी, मास.: हैंडरिक्सन पबलिशर्स, 1997), 2:636. [16]जेक पी. लेविस, "בְּאֵר שֶׁבַע" *TWOT* में, 1:87. बेर्शेबा के नाम का दूसरा विवरण उत्पत्ति 26:31-33 में पाया जाता है। [17]विक्टर पी. हैमिल्टन, *दि बुक ऑफ जेनेसिसः चैपटर 18-50*, पुराना नियम पर न्यू इंटरनेशनल कमैंट्री (ग्रैंट रेपिडस, मिश.: डब्लयुएम. बी. एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1995), 93. [18]के. ऐ. किटचेन, *ऑन दि रिलायबिलिटी ऑफ दि ओल्ड टेस्टामेंट* (ग्रैंड रेपिडस, मिष.; डब्लूएम, बी, एर्डमैनस पबलिर्षिंग कम्पनी, 2003), 340-41. [19]हैमिल्टन, 94. [20]वेन्हाम, 94.

[21]मकपेला वाली गुफा, जिसको हेबोन में अब्राहम ने सारा को गाड़ने के लिए खरीदा था, कुलपति के लिए परमेश्वर की ओर से मिरास के वरदान का भाग नहीं था (देखें 23:1-20)। [22]पौलुस इस बाइबल अंश के अर्थ को समझ गया था कि इश्माएल ने इसहाक को "सताया" (गला. 4:29); परन्तु उसने यह नहीं का कि क्या यह मानसिक, शारीरिक सतावट थी, या दोनों ही तरह की सतावट थी।